

(11)

उत्तराखण्ड शासन  
मान्यता/संस्कृत शिक्षा अनुभाग 4  
संख्या- 16 /xxiv-4/2011-5(1)/2010  
देहरादून: दिनांक 04 फरवरी 2011  
कार्यालय-आदेश

संस्कृत विद्यालयों की मान्यता एवं परीक्षाओं के लिए उत्तराखण्ड संस्कृत शिक्षा परिषद् का गठन किये जाने के सम्बन्ध में मा0 मंत्रिमण्डल के आदेश संख्या-4/2/XVI/XXI/2010-सी0एक्स, दिनांक 27-12-2010 के अनुपालन में मंत्रिमण्डल निर्णयों के बिन्दु संख्या-1 से 8 (निर्णय बिन्दु सं0-1 से 8 संलग्न) पर समयबद्ध रूप से क्रियान्वित किये जाने हेतु निम्नवत् समिति का गठन किया जाता है:-

- |     |   |            |
|-----|---|------------|
| (1) | मा0 शिक्षा मंत्री जी, उत्तराखण्ड सरकार।             | अध्यक्ष    |
| (2) | प्रमुख सचिव, संस्कृत शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड शासन। | सदस्य      |
| (3) | कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार। | सदस्य      |
| (4) | अपर सचिव, कार्मिक विभाग, उत्तराखण्ड शासन।           | सदस्य      |
| (5) | अपर सचिव, वित्त विभाग, उत्तराखण्ड शासन।             | सदस्य      |
| (6) | अपर सचिव, संस्कृत शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड शासन।    | सदस्य      |
| (7) | निदेशक, संस्कृत शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड देहरादून।  | सदस्य सचिव |

2. उपर्युक्तानुसार यह समिति मंत्रिमण्डल के उपरोक्त निर्णयों का क्रियान्वियन शीघ्र सुनिश्चित करेगी।

(पी0सी0 शर्मा)  
प्रमुख सचिव।

संख्या- 16 (1)/xxiv-4/2010, तददिनांकित

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1. कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
2. निदेशक, संस्कृत शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड देहरादून।
3. निजी सचिव, मा0 शिक्षा मंत्री को मा0 मंत्री जी के अववलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, प्रमुख सचिव, संस्कृत शिक्षा, उत्तराखण्ड शासन को प्रमुख सचिव महोदय के सूचनार्थ।
5. अपर सचिव, कार्मिक विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
6. अपर सचिव, वित्त विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
7. अपर सचिव, संस्कृत शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
8. निदेशक, एन0आई0सी0 सचिवालय परिसर।
9. गार्ड फाईल।

आज्ञा से,  
(नितेश कुमार झा)  
अपर सचिव।

## मंत्रिमण्डल के आदेश दिनांक 27-12-2010 को पारित निर्णय बिन्दु-01 से 08

- (1) कक्षा-1 से 10 तक संस्कृत शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में तथा इण्टरमीडिएट कक्षाओं (विज्ञान वर्ग सहित) में ऐच्छिक विषय के रूप में सम्मिलित किये जाने की व्यवस्था एवं राज्य में स्थापित निजी शिक्षण संस्थाओं/परिषदों को भी उनके अधीन संचालित कक्षा 01<sup>1</sup> से 10 में संस्कृत शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित किये जाने के सम्बन्ध में प्रेरित किया जाय।
- (2) हरिद्वार एवं ऋषिकेश को संस्कृत नगरी घोषित किया जाय। हरिद्वार व ऋषिकेश में व्यवसायिक केन्द्रों में कार्यरत लोगों को संस्कृत भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु प्रेरित करने के दृष्टिगत नैतिक रूप में प्रयोग होने वाली भाषा/शब्दों का संस्कृत भाषा में रूपान्तरण सम्बन्धी किताबें/सामग्री/बुकलेट तैयार कर प्रचारित एवं प्रसारित की जाय।
- (3) गढ़वाल मण्डल एवं कुमायूं मण्डल से एक-एक गांव संस्कृत ग्राम के रूप में चिन्हित किया जाय।
- (4) प्रदेश के सभी जिला कार्यालयों (कलेक्ट्रेट) में संस्कृत अनुवादकों के एक-एक पद (कुल-13 पद) सृजित किये जाने एवं उन पर शीघ्रातिशीघ्र नियुक्तियां किए जाने के सम्बन्ध में यथाप्रक्रिया अग्रेत्तर कार्यवाही की जाय। संस्कृत अनुवादकों की आवश्यकता वाले विभागों को चिन्हित करते हुए पद सृजन का प्रस्ताव यथाप्रक्रिया मंत्रिमण्डल के समक्ष प्रस्तुत किया जाय।
- (5) संस्कृत भाषा का व्यापक प्रचार-प्रसार किये जाने हेतु विस्तृत कार्ययोजना तैयार की जाय।
- (6) शासकीय कार्यालयों/अधिष्ठानों की नाम पट्टिकाएं संस्कृत भाषा में भी लिखी जाय।
- (7) संस्कृत शिक्षा विभाग को सुगठित एवं सुव्यवस्थित करते हुए उक्त के सुचारु रूप से संचालन हेतु सृजित पदों के सापेक्ष योग्य एवं पात्र अधिकारियों/व्यक्तियों को प्रतिनियुक्ति /निःसंवर्गीय पदों पर नियुक्त किया जाय।
- (8) देवप्रयाग स्थिति निजी ज्योतिष शोध संस्थान को पुनर्जीवित करने हेतु आवश्यक अग्रेत्तर कार्यवाही की जाय